रात का गीत (1 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 13:13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई है, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है।

प्रेम का वर्णन करना असंभव लगता है, यह अद्भुत गुण है जिसके बिना परमेश्वर की दृष्टि में कुछ भी स्वीकार्य नहीं है! प्रेरित प्रेम की परिभाषा देने का प्रयास नहीं करते हैं, लेकिन हमें प्रेम के प्रत्यक्ष उदाहरण देकर खुद को संतुष्ट करते हैं। जिनके पास इन विशेषताओं के साथ प्रेम का चरित्र है, वे इसकी सराहना करने में सक्षम हैं, लेकिन इसे समझाने में सक्षम नहीं हैं। हकीकत यह है कि जीवन और प्रकाश की तरह प्रेम को परिभाषित करना मुश्किल है; और इसे समझने की हमारी पूरी कोशिश प्रेम के प्रभावों के आस-पास होती है। प्रेम परमेश्वर का है; प्रेम हृदय में, जीभ में, हाथों में और विचारों में भक्ति और ईश्वरीय समानता का होना है - सभी मानवीय गुणों की निगरानी और उनका नियंत्रण प्रेम के द्वारा करने की खोज में रहना है। जहां प्रेम की कमी है, परिणाम कम या अधिक बुरे होते हैं; जहां प्रेम मौजूद है, परिणाम प्रेम के स्तर के अनुसार भिन्न होते हैं, और आनुपातिक रूप से अच्छे होते हैं। `Z'11-421` R4917:2 (Hymn 165) आमीन

रात का गीत (2 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 13:4 प्रेम कृपालु है।

क्या मैं अपने तरीकों में दयालु हूं, अपने तरीके और अपने लहजे की रक्षा करना चाहता हूं, यह जानते हुए कि जीवन के हर मामले के साथ उनका बहुत संबंध है? क्या मेरे कार्यों और शब्दों और विचारों में प्रेम का यह निशान व्यापक तौर पर मिलता है? क्या मैं दूसरों के बारे में सोचता हूँ और क्या मैं दूसरों का ध्यान रखता हूँ? क्या मैं दूसरों के प्रति अपनी बातों में, हाव-भाव में और क्रियाओं में दयालुता महसूस करता हूँ और दिखाता हूँ? एक मसीही को अन्य सभी से ऊपर दयालु, विनम्र, कोमल - घर में, व्यवसाय के अपने स्थान पर, कलीसिया में - हर जगह होना चाहिए। जिस अनुपात में परिपूर्ण प्रेम प्राप्त होता है, हृदय का निरंतर प्रयास होगा की हर शब्द और कार्य, उन विचारों की तरह जो उन्हें उकसाता है, धैर्य और दया से भरा हुआ हो। `Z'11-422` R4918:1 (Hymn 44) आमीन

रात का गीत (3 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 13:4 प्रेम डाह नहीं करता।

क्या मेरे पास वो प्रेम है जो "डाह नहीं करता", एक ऐसा प्रेम जो उदार हो, ताकि मैं दूसरों को समृद्ध देख सकूँ और उनकी समृद्धि में आनन्दित हो सकूँ, भले ही, एक समय के लिए, मेरे अपने मामले इतने समृद्ध क्यों न हों? यह सच्ची उदारता है, ईर्ष्या और डाह जो एक गिरे हुए स्वभाव से आती है, उसका बिलकुल उल्टा। ईर्ष्या की जड़ स्वार्थ है; प्रेम की जड़ पर ईर्ष्या नहीं पनपेगी। प्रेम उनके साथ आनन्द करता है जो आनन्दित होते हैं, हर अच्छे शब्द और काम की समृद्धि में, और मसीही अनुग्रह में उन्नति में और उन सभी की दिव्य सेवा में जो दिव्य आत्मा के द्वारा कार्य करते हैं। `Z'11-422` R4918:2 (Hymn 112) आमीन

रात का गीत (4 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 13:4 प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं।

क्या मेरे पास ऐसा प्रेम है जो नम्र है, जो "अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं"? ऐसा प्रेम जिसका झुकाव विनम्रता की ओर है, जो अपना बखान नहीं करता, जो ऊंचा नहीं सोचता? क्या मेरे पास ऐसा प्रेम है, जो

अच्छी क्रियाएं करने के लिए हमको तत्पर करता है, ऐसी क्रियाएं जिसको मनुष्य नहीं देख सकते हैं, पर वो प्रेम ऐसा ही रहेगा जिसको कोई देखे या जिसके बारे में कोई जाने पर केवल परमेश्वर जानते हैं; ऐसा प्रेम जो अपने ज्ञान का बखान नहीं करता, न ही अनुग्रह का बखान करता है, पर नम्रता के साथ हर उस अच्छे और परिपूर्ण इनाम को स्वीकार करता है, जो परमेश्वर पिता से आता है? और क्या मैं इस प्रेम के बदले परमेश्वर पिता को अपने प्रेम और सेवा के द्वारा उनकी हर एक करुणा के लिए उनको भेंट में कुछ वापस देता हूँ? `Z'11-422` R4918:2 (Hymn 224) आमीन

रात का गीत (5 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 13:5 वह (प्रेम) अनरीति नहीं चलता।

क्या मेरे पास ऐसा प्रेम है जो भद्र है, जो "अनरीति नहीं चलता"? घमण्ड वह जड़ है जिसमें से बहुत से अस्वाभाविक आचरण, अपवित्रता के लिए बढ़ते हैं, जो उन लोगों के लिए आम है जो खुद को बौद्धिक या आर्थिक रूप से कुछ समझते हैं। भद्रता का मतलब है मामूली से मामूली बातों में प्रेम दिखाना; शिष्टाचार का मतलब है छोटी वस्तुओं में भी प्रेम दिखाना। भद्रता या तो बाहरी चमक के कारण दिखाई जाती है या हृदय में प्रेम के

कारण। मसीहियों के रूप में हमारे में हृदय का प्रेम होना चाहिए जो हमें दया और शिष्टाचार के कार्य करने के लिए प्रेरित करे, न केवल विश्वास के घराने में, बल्कि हमारे घरों में और दुनिया के साथ हमारे व्यवहार में भी। `Z'11-422` R4918:2 (Hymn 267) आमीन

रात का गीत (6 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 13:5 वह (प्रेम) अपनी भलाई नहीं चाहता।

क्या मुझ में ऐसा प्रेम है जो कि निस्वार्थ प्रेम हो, जो केवल "अपनी भलाई नहीं चाहता", ऐसा प्रेम जो दूसरों के हितों के लिये अपने कुछ अधिकारों का बलिदान करने के लिये तैयार रहता है? या फिर, इसके विपरीत, क्या मुझमें स्वार्थ है, जो न केवल अपने अधिकारों का दावा हर अवसर पर करता है, बल्कि वह इन अधिकारों को दूसरों की सुविधा, आराम या अधिकार की कीमत पर भी प्राप्त करने की कोशिश करता है? इस विशेष रूप से प्रेम करने का मतलब है कि, हम दूसरों का कोई भी अनुचित लाभ उठाने के प्रति सतर्क होंगे, और कोई गलत कार्य करने की जगह, किसी की गलती के कारण दुःख उठाना पसंद करेंगे; कोई अन्याय करने की जगह, हमारे ऊपर हुए अन्याय के लिये दुःख उठाना पसंद करेंगे। `Z'11-422` R4918:3 (Hymn 191) आमीन

रात का गीत (7 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 13:5 वह (प्रेम) झुंझलाता नहीं।

क्या मुझ में ऐसा प्रेम है जो कि अच्छे स्वभाव का हो, जिसे क्रोध के प्रति आसानी से उकसाया नहीं जा सके, जो "झुंझलाता नहीं"? ऐसा प्रेम जो मुझे एक सवाल के दोनों पहलुओं को देखने में सक्षम बनाता है, जो मुझे एक संयम बुद्धि की आत्मा देता है, जो मुझे यह अनुभव करने में सक्षम बनाता है कि झुंझलाहट और हिंसक क्रोध न केवल असहनीय हैं, बल्कि उससे भी बदतर हैं, यह उन लोगों के लिए भी हानिकारक हैं जिनपर क्रोध किया जाता है और हमारे अपने मन और शरीर पर भी हानिकारक प्रभाव डालते हैं। `Z'11-422` R4918:3 (Hymn 18) आमीन

रात का गीत (8 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 13:5 वह (प्रेम) बुरा नहीं मानता।

क्या मुझ में ऐसा प्रेम है जो कि "बुरा नहीं मानता", जो निष्कपट है, जो दूसरों में बुराई होने का संदेह नहीं करता या दूसरों में दोष नहीं ढूंढ़ता, दूसरों के उद्देश्यों को बुरा नहीं ठहराता? क्या मुझ में ऐसा प्रेम है जो कि दूसरों के आचरण को हमेशा उदारता से लेता है, जो की हर संभव इस

गुंजाइश के लिये तैयार हो की मेरा निर्णय गलत हो सकता है, बजाए इसके की दूसरों के हृदय के उद्देश्यों पर संदेह करे? परिपूर्ण प्रेम का खुद का इरादा अच्छा होता है; यह प्रेम दूसरों की बातों और आचरण को समान दृष्टिकोण से देखना पसंद करता है और जहाँ तक संभव हो, इसके लिये पूरा प्रयास भी करता है। यह प्रेम शत्रुता और संदेह का खजाना इकठ्ठा नहीं करता है, और न ही तुच्छ मामलों से बुरे इरादों के परिस्थितिजन्य सबूतों की एक श्रृंखला का निर्माण करता है। "जहाँ प्रेम में कमी होती है, वहाँ दूसरों में अधिक दोष दिखता है", एक बहुत ही बुद्धिमान कहावत है। `Z'11-422` R4918:3 (Hymn 18) आमीन

रात का गीत (9 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 13:6 वह (प्रेम) कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।

गलती चाहे कितनी भी लाभदायक हो, प्रेम उसमें कोई हिस्सा नहीं ले सकता, और न ही प्रेम बुराई के इनाम को पाने की चाहत रख सकता है। बल्कि प्रेम सत्य से आनन्दित होता है - प्रत्येक विषय पर सत्य, और विशेष रूप से दिव्य प्रकाशन से मिले सत्य से आनन्दित होता है, फिर चाहे वह सत्य विख्यात न हो; फिर चाहे सत्य की वकालत करने के कारण कितनी भी ताड़नाओं का सामना करना पड़े; फिर चाहे इस सत्य के कारण

इस संसार के लोगों की मित्रता को खोना पड़े या उन लोगों की मित्रता को खोना पड़े जिनकी ऑंखें इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी हैं। प्रेम की आत्मा को सत्य के लिये ऐसा लगाव होता है की यह हानि, ताड़नाएँ, क्लेश या चाहे जो भी विपतियाँ सत्य या इसके सेवकों के विरुद्ध आयें, उसमें भाग लेकर आनन्दित होती है। प्रभु के अनुमान में यह सब समान है कि चाहे कोई प्रभु से लजाए या उनकी बातों से लजाए; ऐसे सभी लोगों के लिये प्रभु ने ऐलान किया है की जब वे अपने संतों के साथ महिमा में आयेंगे, वे भी इन जैसे लोगों से लजायेंगे। `Z'11-423` R4918:6 (Hymn 261) आमीन

रात का गीत (10 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 13:7 वह (प्रेम) सब बातें सह लेता है।

क्या मुझ में वह प्रेम है जो "सब बातें सह लेता है"; जिसे बुराई के हमलों के द्वारा हराया न जा सके; जो बुराई, अशुद्धता, पाप, और सब कुछ जो प्रेम के विपरीत है, का विरोध करता है; जो परमेश्वर के कारणों के लिये निन्दाओं, भर्त्सना, अपमान, हानि, झूठा बयान और यहाँ तक कि मृत्यु को सहने में सक्षम है और इच्छुक भी है? "वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है" - जिस विश्वास का जीवन और केंद्र

प्रेम की पवित्र आत्मा है, प्रभु के लिये और उनके लिये जो प्रभु के हैं, और दुनिया के लिये सहानुभूति वाला प्रेम। परिपूर्ण प्रेम सभी परिस्थितियों में सहन कर सकता है और परमेश्वर के अनुग्रह से हमें जयवंत बना सकता है और "जिस ने (प्रभु यीशु ने) हम से प्रेम किया है उसके द्वारा हमें जयवन्त से भी बढ़कर बना सकता है।" `Z'11-423` R4919:1 (Hymn 209) आमीन

रात का गीत (11 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 13:7 वह (प्रेम) सब बातों की प्रतीति करता है ।

क्या मेरे पास ऐसा प्रेम है जो "सब बातों की प्रतीति करता है", जब तक कि निर्विवाद सबूतों द्वारा ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है, तब तक दूसरे पर बुराई थोपने के लिए तैयार नहीं होता है; ऐसा प्रेम जो कि हर किसी के बारे में बुराई के बदले उसकी अच्छाई पर यकीन करता है; जिसे किसी की बुराई सुनकर कोई आनंद नहीं होता है, बल्कि वह स्वभाविक तौर पर बुराई सुनकर अप्रसन्न होता है? परिपूर्ण प्रेम संदेह नहीं करता है, लेकिन इसके विपरीत, स्वभाविक तौर पर हमेशा भरोसा करता है। यह इस सिद्धांत पर कार्य करता है कि एक संदिग्ध दिमाग के द्वारा खट्टा जीवन की तुलना में सौ बार धोखा खाया जाए, तो बेहतर है

- किसी एक व्यक्ति पर भी अन्यायपूर्ण तरीके से आरोप लगाने या संदेह करने से बेहतर है। यही दयावन्त स्वभाव हैं, जिसे विचारों पर लागु किया जा सकता है, और जिसके लिये हमारे स्वामी ने कहा था, "धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उनपर दया की जायेगी"। `Z'11-423` R4919:1 (Hymn 267) आमीन

रात का गीत (12 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 13:7 वह (प्रेम) सब बातों की आशा रखता है।

इस प्रेम का आशावादी तत्व संतों की दृढ़ता में ध्यान आकर्षित करनेवाली विशेषताओं में से एक है, जो उन्हें अच्छे सैनिकों के रूप में कठोरता को सहन करने में सक्षम बनाती है। आशा का यह गुण एक मसीही को आसानी से नाराज होने से रोकता है, या आसानी से प्रभु के काम में रुकने से रोकता है। जहां दूसरे हतोत्साहित हो जायेंगे या भाग जायेंगे, प्रेम की आत्मा धीरज देती है, ताकि हम एक अच्छा युद्ध लड़ सकें, और हमारे उद्धार के कप्तान को खुश कर सकें। प्रेम की आशा में कोई निराशा नहीं होती है, क्योंकि इस आशा का लंगर वहाँ प्रवेश होता है जो कि पर्दे के उस पार है, और जिसने मजबूती से युगों की चट्टान को थाम कर रखा है। `Z'11-424` R4919:4 (Hymn 201) आमीन

रात का गीत (13 सितम्बर)

2 पतरस 1:8,11 क्योंकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें, और बढ़ती जाएं, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के पहचानने में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी। वरन इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे।

परमेश्वर के सभी लोग, सभी जो पवित्र आत्मा से उत्पन्न हुए हैं, वे पिता की आत्मा, प्रेम की आत्मा, न्याय और वफ़ादारी की आत्मा से प्रेरित हैं। लेकिन यदि हम इस प्रेम की आत्मा की मात्रा को अधिक से अधिक बढ़ाते रहें और यही आत्मा हमारे जीवन के सभी मामलों में मुख्य स्थान ले ले तो कितना अच्छा हो? यदि प्रभु की यह प्रेम की आत्मा हममें बनी रहे और बढ़ती रहे तो निश्चय यह हमारे व्यापार, हमारी खुशियों, हमारे घरों, हमारे कार्यालयों, हमारे रसोई - घरों, भोजन करने के कमरों, हमारे सोने के कमरों, यहाँ तक की हमारे विचारों को भी प्रभावित करेगी। यह प्रचुर मात्रा में प्रेम है, जिसकी जरूरत है, जिसके द्वारा प्रभु उनके जीवन को और जीवन के सभी मामलों को व्यापक रूप से प्रभावित करते हैं, जिन्हें वे दुल्हन की श्रेणी का सदस्य होने के नाते, मसीहा के राज्य में बड़े आदर से प्रवेश करने का अवसर देंगें। `Z'11-442` R4929:3 (Hymn 1) आमीन

रात का गीत (14 सितम्बर)

2 इतिहास 32:8 हमारे साथ, हमारी सहायता और हमारी ओर से युद्ध करने को हमारा परमेश्वर यहोवा है।

आज के आत्मिक इस्राएल के सभी लोगों के लिए यहाँ क्या सबक है! जब हमारे सबसे अभिमानी, सबसे मजबूत शत्रु हमारे ऊपर सबसे अधिक विजय प्राप्त करते हुए लगते हैं, जब वे प्रभु और उनके वचनों की निंदा करते हुए सबसे जोर से खड़े होते हैं, यही वह समय है जब हमें सबसे बड़े आत्मविश्वास के साथ प्रभु के वादों पर पकड़ बनानी चाहिए। वास्तव में, यह हमारा अनुभव रहा है कि जिन लोगों ने पूरी तरह से जड़ पकड़ के और नींव डालकर रखी है, जिनकी आशाओं की लंगर ने निश्चित रूप से पर्दे के अंदर अपनी पकड़ बनाकर रखी है, वे वो लोग हैं जो अत्यंत कड़े अनुभव के द्वारा परखे गए हैं, और जिनके पास जब उनकी सहायता के लिये कोई भी सांसारिक हाथ उपस्थित नहीं था, तब उनके पास प्रभु को पूरी सामर्थ्य से सहायता के लिए बुलाने के अवसर थे। कितने लोगों ने पाया है कि सांसारिक संबंधों के टूटने का मतलब है स्वर्गीयों संबंधों का मजबूत होना, कि दुनिया और विरोधी शैतान के विरोध का मतलब आत्मिक अनुग्रह का बढ़ना है, क्योंकि, "जो तुम में है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है।" `Z'05-191` R3582:6 (Hymn 301) आमीन

रात का गीत (15 सितम्बर)

इफिसियों 1:18 और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है।

हृदय और दिमाग को इस हद तक खोलने के लिये समय चाहिए होता है, ताकि हमारा मन इस वचन की तरह परमेश्वर के अपने चुने हुओं के लिए रखी गई अद्भुत आशीष की एक झलक देख सके। पर जिनको हमारे महिमामय परमेश्वर के कलीसिया के प्रति अनुग्रह की हल्की सी भी झलक मिलती है; वे इसे देखकर आश्चर्यचकित नहीं होते की परमेश्वर की दिव्य योजना में उदारता से यानि पिछले 19 सदियों से, उनके संतों को बुलावे के लिए और ताड़ना देने के लिए और उनके संतों को परिपूर्ण करने के लिए अनुमति दी गई है, ताकि वे उस महान और महिमा के कार्य के लिए तैयार हो सकें, जिसके लिए वे मसीहा के साथ साँझा वारिस के रूप में बुलाये गए हैं। वे इन अग्निमय परीक्षाओं पर अचम्भा नहीं करेंगे जो उन सभों को परखती है, जिन्हें हमारे प्रभु परमेश्वर ने बुलाया है, और जिन्हें परमेश्वर संभावित रूप से राज्य की श्रेणी के चुने हुए सदस्य के रूप में स्वीकार करते हैं। वे लोग तत्परता से पर्याप्त रूप से यह समझ पाएंगे, कि जब हमारे प्रभु यीशु के लिये, उनके स्वर्गीय दरबारों के सभी अनुभवों के होने के बावजूद भी, "दुख उठा उठा कर आज्ञा मानना सीखना" आवश्यक

था, और यहाँ तक की मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहकर पिता के सामने अपनी वफ़ादारी को साबित करना था, तो उनके चेलों के लिये इससे कहीं अधिक परीक्षाओं की आवश्यकता है क्योंकि - उनका पिछला इतिहास तो पापियों का था - इसलिये प्रभु के प्रति इनकी वफ़ादारी को साबित करने के लिये इनका पूरी तरह से जाँचा और परखा जाना अत्यंत आवश्यक है। `Z'03-93` R3168:1 (Hymn 291) आमीन

रात का गीत (16 सितम्बर)

1 यूहन्ना 5:21 हे बालको, अपने आप को मुरतों से बचाए रखो।

बुराई कपट से भरी है, और प्रभु के मार्ग से थोड़ा भी अलग होना, दिव्य मार्ग को थोड़ा भी छोड़ना, धार्मिकता से एक अंश तक अलग होने का संकेत देता है, जिसका अनुमान हम शुरुआत में लगाने में असमर्थ हैं। आइये हम यह जाने की प्रभु पर भरोसा करना ही केवल सबसे सुरक्षित मार्ग है और हमारे लिये प्रभु के दिव्य प्रावधानों में जो कुछ भी रखा गया है उससे हम आनंदित हों, और जो कुछ भी उनकी इच्छा के विरुद्ध है उससे हम इंकार कर दें, फिर चाहे वह हमें कितना ही भाता हो, या मानवीय महत्वकाँक्षाओं की पूर्ति के लिये कितना ही संतुष्टिदायक हो। आइये हम यह सबक सीखें की महत्वकाँक्षा एक खतरनाक वस्तु है -

विशेषकर हमारी वर्तमान अपरिपूर्ण स्थिति में, जहां हमारे निर्णय पतन से कम या ज्यादा विकृत हैं, जहां हमारा ज्ञान अपरिपूर्ण है, और जहां शैतान का अंधकार के लिए प्रकाश डालना और प्रकाश के लिये अंधकार डालना सुनिश्चित है। हमारी महत्वाकांक्षाओं पर अंकुश लगाया जाना चाहिए, हाँ, हर विचार को मसीह में परमेश्वर की इच्छा के अधीन किया जाना चाहिए, तभी हम मसीह यीशु में नई सृष्टि के रूप में सुरक्षित आधार पर होंगे। `Z'04-189` R3386:4 (Hymn 272) आमीन

रात का गीत (17 सितम्बर)

भजन संहिता 24:3,4 यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है? और उसके पवित्र स्थान में कौन खड़ा हो सकता है? जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध है, जिसने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया, और न कपट से शपथ खाई है।

जिन लोगों ने प्रभु को हृदय का पूरा समर्पण किया है, वे प्रेम की व्यवस्था के अंतर्गत मन के शुद्ध कहलाते हैं। लेकिन उनके मनों, उनके इरादों, उनकी इच्छा की पवित्रता के बावजूद, प्रेम की शाही व्यवस्था को पूरा करने के लिए, इनके पास एक युद्ध है लड़ने के लिये। उनके शरीर के अंग, विरासत में मिले पाप के कारण भ्रष्ट होने के कारण, स्वार्थ के कानून का

मजबूती से पालन करते हैं, जो की प्रेम के कानून का विरोध करता है। इन लोगों ने प्रेम की व्यवस्था के अनुसार चलने का संकल्प लिया है लेकिन इनके शरीर की व्यवस्था इनका लगातार विरोध करती है। फिर भी प्रेम के उस नए कानून की आवश्यकताओं को पूरा करने में उनकी अक्षमता इच्छाशक्ति की कमी, शुद्ध, वफादार दिल के इरादे की कमी के कारण नहीं होनी चाहिए। वे जो भी असफलता हासिल करते हैं, जीत हासिल करने में जो भी कमी रह जाती है, यह पूरी तरह से शरीर की कमजोरी और विरोधी शैतान के घेराव के कारण होनी चाहिए, जिनका विरोध करने में उनके शुद्ध ह्रदय असफल रहे हों। यहाँ प्रभु के वादे मददगार होते हैं, जो उन्हें यह आश्वासन दिलाते हैं कि परमेश्वर उनकी कमजोरियों और दोषों को जानते हैं, साथ ही शैतान की युक्तियों और दुनिया की आत्मा के प्रभाव को भी जानते हैं, जो कि प्रेम की आत्मा के विपरीत हैं। परमेश्वर उन्हें बताते हैं कि वे स्वर्गीय अनुग्रह के सिंहासन के पास पूरी स्वतंत्रता से जा सकते हैं, ताकि वे वहाँ अपनी असफलताओं के संबंध में दया प्राप्त कर सकें और उस उच्चतम स्तर के अनुसार जी सकें जिसको उनके ह्रदय ने स्वीकारा है और जिस स्तर को पाने का वे प्रयास करते हैं। परमेश्वर उन्हें यह भी आश्वासन देते हैं कि आवश्यकता के हर समय सहायता करने के लिए उन्हें अनुग्रह मिल सकता है। `Z'12-336` R5123:4 (Hymn 150) आमीन

रात का गीत (18 सितम्बर)

यूहन्ना 20:19 उसी दिन जो सप्ताह का पहला दिन था, सन्ध्या के समय जब वहां के द्वार जहां चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आया और बीच में खड़ा होकर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले।

हममें से बहुत हैं जिनकी परिस्थिति कुछ ऐसी है की वे अपने ह्रदय की इच्छा को पूरा नहीं कर पाते हैं, की वे भी अक्सर दूसरे भाईयों के साथ, जो एक ही बहुमूल्य विश्वास के हैं, उनके साथ संगति कर सकें, ताकि परमेश्वर के वादों पर अच्छी चीजें बात कर सकें; लेकिन जो अकेले हैं उन्हें यह सोचकर निराश होने की जरुरत नहीं है, कि परमेश्वर के वचन मत्ती 18:19 वचन में बोलते हैं, "की जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकठ्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ", और जो लोग अकेले हैं उनके लिये यह वादा नहीं है। इन लोगों को अपने चारों ओर देखते रहना चाहिए कि प्रभु ने ऐसे क्या प्रबंध किये हैं, जिसके द्वारा कम से कम दो या तीन आपस में मिल सकें और एक साथ मिलकर परमेश्वर के वचनों पर चर्चा कर सकें ... हम पूरी तरह से आश्वस्त हो सकते हैं की, जिन भाईयों के पास अवसर है दूसरे भाईयों के साथ मिलने का, साथ मिलकर बात करने का, और जो इस अवसर का लाभ उठाने में असफल होते हैं, वे हमारे महान उद्धार में उनकी रूचि में कमी को प्रगट करते हैं, और यह भी की ऐसे लोग अपनी बाकि बची रूचि को भी खो देंगे, और प्रभु के द्वारा दिये

गए आदेशों का पालन करने में भी असफल हो जायेंगे, जिसके कारण उन "गहनों" की गिनती में आने में भी असफल हो सकते हैं, जिनको प्रभु इकठ्ठा करेंगे। इसके विपरीत यदि कोई स्वर्गीय चीज़ों में कम रुचि लेता है, दिव्य योजना की विशेषताओं और उसके वादों पर चर्चा करने में कम दिलचस्पी लेता है, और केवल सांसारिक मामलों, व्यवसाय आदि पर बातचीत करने पर खुश होता है, तो यह एक हानिकारक चिन्ह है। संभव है की प्रभु ऐसे लोगों में कोई दिलचस्पी नहीं लेंगे और न ही उनकी ओर मुड़ेंगें और न ही पवित्रशास्त्र को समझने के लिये उनकी समझ को ही खोलेंगे, जबकि जो लोग सत्य के भूखे और प्यासे हैं, उनकी समझ की आँखों को खोलकर प्रभु निश्चय अति प्रसन्न होंगें। `Z'01-136` R2802:1 (Hymn 329) आमीन

रात का गीत (19 सितम्बर)

1 थिस्सलुनीकियों 5:25 हे भाइयों, हमारे लिये प्रार्थना करो।

विरोध में जोर-जबरदस्ती करना हमारे लिए नहीं है, न ही हमें अपने अधिकारों के बारे में जोर से चिल्लाना है। हमें यह याद रखना चाहिए कि क्रूस का सैनिक बनने के दौरान हमने स्वेच्छा से सभी सांसारिक अधिकारों को छोड़ दिया, ताकि हम अपने उद्धार के कप्तान के साथ भागीदार हो

सकें, जिन्होंने अपने सभी अधिकारों को, यहाँ तक कि मृत्यु तक, उनसे ले लेने की अनुमति दे दी थी। जैसा कि यीशु के अनुयायियों को दुनिया और स्वर्गदूतों के लिए एक तमाशा बनाया जाता है, उन्हें प्रभु और उनके संदेश के लिए अपने प्यार और उत्साह के द्वारा अति पवित्र विश्वास में एक दूसरे को मजबूत करने और बढ़ाने की भी अनुमति है। हम ऐसी परिस्थितियों में एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने के अपने विशेषाधिकार को अच्छी तरह से याद रख सकते हैं। हम प्रभु से यह प्रार्थना नहीं कर सकते हैं कि वे हमें या दूसरों को परीक्षाओं में पड़ने से रोक दें, क्योंकि किसको क्या परीक्षा आनी है इसे दिव्य ज्ञान निर्धारित करेगा, लेकिन यह हमारा विशेषाधिकार है कि हम एक दूसरे के लिए और अपने लिए प्रार्थना करें - उस अनुग्रह के लिए प्रार्थना करें जिसे प्रभु ने हर आवश्यकता के समय देने का वादा किया है। `Z'16-221` R5928:5 (Hymn 115) आमीन

रात का गीत (20 सितम्बर)

यूहन्ना 6:33 क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।

जितना अधिक लोग सांसारिक चीजों से संतुष्ट होंगे उतना ही कम उनका झुकाव स्वर्गीय वस्तुओं की ओर होगा, और जितना अधिक हम स्वर्गीय वस्तुओं से संतुष्ट होंगे, उतनी ही कम भूख हमें सांसारिक चीजों के लिये होगी। नया स्वभाव पुराने स्वभाव की कीमत पर फलता - फूलता है, और नई महत्वाकांक्षाएं, आशाएं, और चाहतें पुराने की कीमत पर फलती - फूलती हैं। उसी प्रकार जब पुराना स्वभाव फलता - फूलता है, तो वह वह जीवन के सभी मामलों में नए स्वभाव की कीमत पर फलता - फूलता है। आइये हम, नाशमान भोजन और उस भोजन में अंतर कर सकें जो दिव्य आशीषें - अनन्त जीवन लेकर आता है - आइये हम उस भोजन को चुनें जो अनंत जीवन देता है, आइये हम अधिक से अधिक प्रभु पर ध्यान करें और वचनों का भोजन करें, और इस प्रकार से प्रभु और उनकी शक्ति के प्रभाव में बलवंत हों, और अधिक से अधिक दुनिया, उसकी आत्मा, उसकी आशाओं, उसकी महत्वाकांक्षाओं से छूट जाएँ। हम एक स्वर्गीय देश चाहते हैं, एक स्वर्गीय राज्य, एक स्वर्गीय स्वभाव, और स्वर्गीय गुण, जो उस स्वर्गीय स्वभाव के अनुरूप हो और उसके लिये तैयार हो। हमने महान जीवन देने वाले को पाया है, जो स्वर्ग से इस रोटी की आपूर्ति कर सकते हैं और करते भी हैं। यह हमारे लिये एक बहुत ही बड़ा विशेष अधिकार है कि हम भी इस रोटी को दूसरों को देनेवाले बनेंगे। "उन्हें खाने को दो।" "जिस के सुनने के कान हों, वह सुन ले।" `Z'04-79` R3334:4 (Hymn 96) आमीन

रात का गीत (21 सितम्बर)

इफिसियों 6:11 परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको।

प्रभु के बच्चों को यह देखना है कि वे पाप में बहक न जाएँ और पाप की सेवा में न लग जाएँ; वे जिस इस हद तक ऐसा करेंगे, उसी अनुपात में अपने आपको बेरंग करेंगे और खुद को प्रभु का विरोधी बनाकर खड़ा करेंगे। जब मसीही शैतान और उसकी युक्तियों के विरुद्ध एक निश्चित रुख अपनाते हैं तो वे उसके हमलों से मुक्त हो जाते हैं - ऐसा नहीं कि शैतान उनसे इस अर्थ में भाग जाता है कि वह अपनी हानि होने से डरता है, लेकिन यह की शैतान उन्हें छोड़ देगा। जैसे एक सेना का सेनाध्यक्ष युद्ध से अपनी सेना को पीछे हटा लेता है, जब उसे यह पता चलता है कि नगर के फाटकों को दृढ़ता से संरक्षित किया गया था और यह कि उसका हमला करना बेकार है, उसी प्रकार शैतान भी पीछे हैट जाता है जब उसको पता चलता है कि उसका हमला करना बेकार है। यदि विरोधी शैतान किसी को अच्छी तरह से संरक्षित पाता है और वह शैतान का विरोध दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ करता है, तो शैतान एक बार में पीछे हट जाएगा। लेकिन अगर पाप के साथ कोई भी बातचीत हो, किसी मामले को पाप के रूप में देखा जाये तब भी उसपर विचार करने की प्रवृत्ति हो, तो विरोधी शैतान के प्रवेश करने का द्वार खुल जाता है; और वह नये तरीके से हमला करते हुए

आगे बढ़ेगा, अपने हमले को सबसे आकर्षक प्रकाश में रखेगा, ताकि वह नियंत्रण ले सके, ताकि वह उस हृदय में प्रवेश कर सके जहां उसे कमजोरी मिली है। इसलिए यह अत्यंत महत्तवपूर्ण है कि जब परमेश्वर के बच्चे को पता चलता है कि उसे बुराई से मोहित किया जा रहा है तब उसे एक सकारात्मक और फुर्तीला निर्णय लेना चाहिए। एक पल की हिचकिचाहट भी बहुत खतरनाक है। जो लोग प्रभु के लिए अपने को स्थिरता से खड़ा रखते हैं, जो खुद को पूरी तरह से और बिना किसी शर्त के प्रभु को सौंप देते हैं, वैसे लोगों की रक्षा करने के लिए प्रभु सहमत हुए हैं। प्रभु कुछ समय के लिये शत्रु को उनपर हमला करने की अनुमति दे सकते हैं, लेकिन प्रभु उन्हें तब तक बचाते रहेंगे जब तक की वे लोग वफादार और सच्चे बने रहेंगे; और इन लालसाओं के परिणामस्वरूप उन्हें और मजबूत बनाया जाएगा। `Z'16-148` R5896:6 (Hymn 44) आमीन

रात का गीत (22 सितम्बर)

निर्गमन 15:1,2 तब मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा के लिये यह गीत गाया। उन्होंने कहा, मैं यहोवा का गीत गाऊंगा ... यहोवा मेरा बल और भजन का विषय है, और वही मेरा उद्धार भी ठहरा है; मेरा ईश्वर वही है, और मैं उसके लिये निवासस्थान बनाऊंगा, मेरे पूर्वजों का परमेश्वर वही है, मैं उसको सराहूंगा।

यदि यह उचित था, जैसा कि हम सभी स्वीकार करते हैं कि यह था, कि इस्राएलियों को मिस्र के बंधन से उनके उद्धार के लिए परमेश्वर को महिमा प्रदान करनी चाहिए, तो यह अधिक उचित है कि आत्मिक इस्राएल को शैतान की शक्ति और पाप के दासत्व से मिले, ज्यादा बड़े उद्धार को पहचानना चाहिए, जिसे परमेश्वर के मेमने के लहू के द्वारा हमारे लिये प्राप्त किया गया है, जो हमारे पापों के लिये मरे थे। यदि अशिक्षित लोग जो लंबे समय तक गुलामी में रहे थे और जिन्हें इस सुसमाचार के युग के फायदे नहीं थे, वे प्रभु को धन्यवाद देने के लिए प्रोत्साहित थे, तो हमें और कितना अधिक धन्यवाद देना चाहिए, जिन्होंने उनकी भलाई का स्वाद चखा है, हमें परमेश्वर की स्तुति और प्रशंसा करनी चाहिए, जिन्होंने हमें अंधकार से निकालकर अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उनके गुण प्रगट करने चाहिए! (1 पतरस 2:9) क्या आश्चर्य है, तब, कि हर जगह पवित्रशास्त्र प्रभु के लोगों को सत्य के सेवक, दास के रूप में संदर्भित करता है, और यह घोषणा करता है कि प्रभु ने न केवल पाप और मृत्यु के भयानक गड्ढे और दलदल की कीच में से हमारे पैर उठाए हैं, बल्कि इसके अतिरिक्त हमारे मुंह में एक नया गीत डाला है, जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। (भजन संहिता 40:2,3) `Z'07-158` R3998:6 (Hymn 79) आमीन

रात का गीत (23 सितम्बर)

यहोशू 1:7 तू हियाव बान्धकर और बहुत दृढ़ हो।

कभी भी ऐसा समय नहीं था जब चरित्र की अधिक मजबूती और अधिक साहस की आवश्यकता थी। हमें प्रभु और उनकी शक्ति के प्रभाव में बलवंत होना है ... हमें नहीं पता कि हमारी कुछ परीक्षाएँ और क्लेश किस रूप में आएंगे। लेकिन हम जो इस "बुरे दिन" में रह रहे हैं, हाँ, इस दिन के बहुत करीब में - अंतिम "लालसा के घंटे" में - निश्चित रूप से हमारे पास परमेश्वर के सारे आत्मिक युद्ध के हथियार होने चाहिए। हमें अपनी बुद्धि की कमर को सत्य से बाँधने की आवश्यकता है; हमें अपने मन, हमारी बुद्धि को गलत उपदेशों के भालों से बचाने के लिए टोप की आवश्यकता है; हमें धार्मिकता की झिलम चाहिए; हमें आत्मा की तलवार चाहिए - जो की चौड़ी और दोधारी है; हमें "शान्ति के सुसमाचार की तैयारी" के जूतों की आवश्यकता है। हमें अपने स्वयं की छाती में से कनानी को दूर करने के लिए, और आसपास की सभी बाधाओं को दूर करने के लिए इन सभी की आवश्यकता है। `Z'15-182` R5707:5 (Hymn 300) आमीन

रात का गीत (24 सितम्बर)

भजन संहिता 63:5,6 मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने भोजन से तृप्त होगा, और मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति करूंगा। जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूंगा, तब रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूंगा।

जिस किसी के पास ध्यान के लिए समय होगा, उसे एक महान आशीष प्राप्त होगी यदि उसके विचार सर्वशक्तिमान की ओर मुड़ेंगे, उनकी अच्छाई को स्वीकार करते हुए, उनकी सभी प्रकट करुणाओं के लिए परमेश्वर की स्तुति करने की कोशिश करेंगे, रात के पहर में परमेश्वर का ध्यान करेंगे... हमें परमेश्वर को चरित्र और सिद्धांत में न्यायपूर्ण, प्रेममय, दयालु, बुद्धिमान, सभी का साकार रूप समझना चाहिए। इससे हमें उनके जैसा बनने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। जितना अधिक हम एक महान चरित्र की सराहना करते हैं उतना ही हम उसका अनुकरण करना चाहते हैं। जितना अधिक हम परमेश्वर के पराक्रम को देखते हैं, प्रकृति और हमारे प्रति उनकी करुणा देखते हैं, उसी अनुपात में हमारे हृदय और होंठ उनकी प्रशंसा करेंगे।`Z'15-312` R5785:5 (Hymn Appendix A) आमीन

रात का गीत (25 सितम्बर)

भजन संहिता 130:5,6 मैं यहोवा की बाट जोहता हूं, मैं जी से उसकी बाट जोहता हूं, और मेरी आशा उसके वचन पर है; पहरूए जितना भोर को चाहते हैं, हां, पहरूए जितना भोर को चाहते हैं, उससे भी अधिक मैं यहोवा को अपने प्राणों से चाहता हूं।

दुःख और तकलीफ के हर अनुभव में, और जब घबराहट की कलह और दिल को दहकाने वाले चुभने वाले ज़ख्म और घाव, जो आत्मा को उकसाते हैं, आत्मा को भयभीत करने की धमकी देते हैं, परमेश्वर के बच्चे को यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर "जानते हैं और प्रेम करते हैं, और परवाह करते हैं, "और उनके सेवा करने वाले दूत हमेशा हमारे निकट हैं", और किसी भी परीक्षा को बहुत गंभीर होने की अनुमति नहीं दी जाएगी। प्रिय स्वामी कुठाली के पास खड़े हैं, और भट्ठी की गर्मी को इतनी तीव्रता से बढ़ने की अनुमति नहीं दी जाएगी कि हमारे चरित्रों का कीमती सोना नष्ट हो जाएगा, या यहां तक कि घायल हो जाएगा। आह नहीं! यदि उनकी कृपा से अनुभव हमारे भले के लिए काम न करें तो वे एक तरफ हटा दिये जाएंगे। परमेश्वर हमसे इतना अधिक प्रेम करते हैं कि वे किसी भी अनावश्यक दुःख, किसी भी अनावश्यक पीड़ा की अनुमति नहीं देंगे।`Z'15-345` R5802:6 (Hymn 12) आमीन

रात का गीत (26 सितम्बर)

मत्ती 28:19 तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ।

निश्चित रूप से वह जो बोने के काम की देखरेख करने के लिए सावधान थे, वह कटाई के काम में भी कम दिलचस्पी नहीं लेंगे और कटाई के संबंध में भी सावधान रहेंगे। आइए हम ऊर्जा और साहस के साथ सच्चाई के हँसवे पर जोर डालें, यह याद करते हुए कि हम प्रभु मसीह की सेवा करते हैं, यह याद करते हुए कि हम फसल के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं, लेकिन केवल "पके हुए गेहूं" को इकट्ठा करने में हमारी ऊर्जा के लिए ज़िम्मेदार हैं। यदि पके हुए गेहूं के कुछ दानों की खोज के लिए परिश्रम बहुत ज्यादा है, तो हमें उन लोगों को खोजकर अधिक आनन्दित होना चाहिए, जो अधिक दुर्लभ और अनमोल हैं, और उन्हें प्रेम करना और उनकी सराहना करनी सीखनी चाहिए। आइए हम भी इस सेवा में जितनी बुद्धिमत्ता का उपयोग कर सकते हैं उसे करते हुए, यह भी याद रखें, कि हमें अपने काम में हिस्सा देने में प्रभु का उद्देश्य यह नहीं था कि हम क्या हासिल कर सकते हैं, बल्कि यह है कि, हम कितना परिश्रम करते हैं, उसके अनुसार हमें आशीष मिले। यह उन प्रिय लोगों के लिए एक उत्साहजनक विचार होगा जो "स्वेच्छा से" काम में लगे हुए हैं; और यदि वे कई बार हतोत्साहित होते हैं, और छोटे परिणाम प्राप्त करते हैं, तो यह आभास कि स्वामी अपनों को पहचानते हैं, और यह कि प्रभु अपने उद्देश्य की सेवा के लिए किए गए हर ईमानदार प्रयास और भाइयों के लिये किये गए बलिदान की

सराहना करते हैं, उन लोगों को साहस देगा जो अन्यथा इस मार्ग में मूर्छित हो सकते हैं। `Z'01-155` R2811:4 (Hymn 309) आमीन

रात का गीत (27 सितम्बर)

यूहन्ना 14:3 और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।

आइए, प्रिय भाइयों, हमारे मन में स्वामी के फिर आने के दिए गए वादे को अच्छे से याद रखें, और अभी उनके परोसिया (अदृश्य उपस्थिति) के समय में इसका पूरा वजन और प्रभाव हमारे प्रत्येक शब्द और क्रिया; यहाँ तक की अपने सभी विचारों पर भी पड़ने दें। आइए हम आशा करें कि हम जल्द ही हमारे पुनरुत्थान में परिवर्तन का अनुभव करेंगे, और हमारे प्रिय उद्धारक की तरह बनेंगे, और जैसे वे हैं वैसा ही उनको देखेंगे, और महान इफिफेनिया में उनकी महिमा के सहभागी होंगे, या राज्य की महिमा में परमेश्वर के पुत्रों की तरह चमकेंगें, यह सब हमें उत्साहित करे - यह हमारे दिलों को ऊर्जा से भर दे, हमारे होठों को खोल दे, और हमें प्रत्येक कर्तव्य, विशेषाधिकार, और अवसर के लिए मजबूत करे - हमारे स्वामी और विश्वास के घराने की सेवा करने के लिए। यदि यह आशा इतनी सदियों से प्रभु के लोगों के लिए एक लंगर रही है, तो हमारे लिए यह

कितना अधिक मायने रखता है, जो अब प्रभु की उपस्थिति के समय में जी रहे हैं, उनके अपोकल्पिसिस की प्रतीक्षा कर रहे हैं - राज्य की महिमा में उनके प्रगट होने की। `Z'03-150` R3193:3 (Hymn 30) आमीन

रात का गीत (28 सितम्बर)

भजन संहिता 45:13 राजकुमारी महल में अति शोभायमान है, उसके वस्त्र में सुनहले बूटे कढ़े हुए हैं।

प्रभु उन लोगों को ढूंढ़ रहे हैं जो उनकी अपने पुरे प्राण के साथ, अपनी पूरी शक्ति के साथ, और अपने पुरे मन से उनकी आराधना करते हैं। ये पुरे प्राणों से सब कुछ करने वाले लोग उस समूह के हैं जिन्हें प्रभु विशेषकर हजार वर्ष की रानी, दुल्हन, मेमने की पत्नी और उनके साथ संगी वारिस के रूप में ढूंढ़ रहे हैं। परमेश्वर ने पहले से यह ठहराया भी है कि, केवल वैसे ही लोग उनके शाही परिवार के सदस्य बन सकते हैं, और दिव्य स्वभाव के समभागी हो सकते हैं, "जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों।" इनको परमेश्वर अनुग्रह और महिमा देंगे, और कोई भी अच्छी वस्तु उनसे रोक के नहीं रखेंगे, क्योंकि वे सीधाई से चलते हैं। `Z'08-299` R4256:1 (Hymn 78) आमीन

रात का गीत (29 सितम्बर)

यूहन्ना 13:17 तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो।

हम शरीर में रहते हुए कभी भी विचार, शब्द और क्रिया में खुद के लिए पूरी तरह से संतोषजनक नहीं हो सकते हैं; और इसलिये हम कभी भी दूसरों के लिए पूरी तरह से संतोषजनक नहीं हो सकते हैं; लेकिन हम कर सकते हैं, हमें करना चाहिए, और परमेश्वर के अनुग्रह से हममें से प्रत्येक को संकल्प करना चाहिए कि जहां तक हमारे मन या हृदय का संबंध है, हम यह सब प्राप्त करें। इससे कम कुछ भी हमारे प्रभु के लिए संतोषजनक नहीं होगा, जिनके हम पवित्र, कुंवारी कलीसिया के सदस्यों के रूप में "मंगेतर" हैं। अगर हम इस उचित, संभव, स्तर पर खरे नहीं उतरते हैं, तो दुल्हन के समूह में जगह सुनिश्चित करने के लिये हम अपने बुलावे और चुनाव को पक्का करने में असफल होंगे। लेकिन अगर हम इन चीजों को करते हैं, अगर दिल से हम इस स्तर पर हैं, और अपनी क्षमता के अनुसार इस स्तर के अनुसार प्रतिदिन जीना चाहते हैं, तो अपने चुने हुओं के सदस्यों के रूप में हमें अपनाकर हमारे स्वर्गीय दूल्हा आनन्दित होंगे। ओह, यह हमारे इस सबक को सीखने पर कितना निर्भर करता है! `Z'09-255` R4460:6 (Hymn 109) आमीन

रात का गीत (30 सितम्बर)

निर्गमन 13:21 और यहोवा उन्हें दिन को मार्ग दिखाने के लिये मेघ के खम्भे में, और रात को उजियाला देने के लिये आग के खम्भे में हो कर उनके आगे आगे चला करता था, जिससे वे रात और दिन दोनों में चल सकें।

जिस प्रकार प्राकृतिक इस्राएल में प्रभु के निर्देशानुसार हर दिन जो किया जाता था, निश्चित रूप से आत्मिक इस्राएल में समान नियमितता के साथ होता है। सभी जो विश्वासी पाए जायेंगे, वास्तव में सभी इस्राएली, जब वे हर सुबह जीवन की यात्रा पर निकलते हैं, जीवन की लड़ाई के लिए, मार्ग की परीक्षाओं और परखे जाने के लिये, उन्हें अपने उद्धार के कप्तान के रूप में प्रभु को देखना अवश्य सीखना चाहिए, केवल जिनके द्वारा ही शैतान और उसकी सेना को हराया जा सकता है, केवल जिनके द्वारा ही हमारी विजय हो सकती है ... कौन सा आत्मिक इस्राएली दिन के अंत में प्रभु की भलाई के लिए मन से पुकार किए बिना और रात के समय में प्रभु से अपने लिये निरंतर अनुग्रह और सुरक्षा की इच्छा रखे बिना सोने के लिये जा सकता है? `Z'07-236` R4039:1 (Hymn 110) आमीन